दुकान, इन सबसे बदला लेने पर उतर आया। मजमें में लगातार बोलते रहने के कारण उसकी आवाज वैसे भी ऊंची है। वह हाथ झटककर कहता है–

'नहीं देगा? कैसे नहीं देगा। तेरे बाप की दुकान है क्या? साले, सरकारी दुकान है। सरकार किसकी है? तेरे पिओ दी। एक रुपये का आटा तोल दे, नहीं तो तू हस्पताल पहुंचेगा और मैं जेल।'

दुकानदार सिकुड़कर पीछे हो गया। लोग अब उसकी मदद पर उतर आए हैं। किसी सहानुभूति के कारण नहीं। इस डर से कि कहीं झगड़ा बढ़ गया, दुकान बंद हो गई तो उन्हें आज राशन नहीं मिलेगा। मिली-जुली आवाजें आईं –

'अरे भाई थोड़ा-सा आटा दे दो। अनपढ़ गंवार है। इसे कार्ड का क्या पता। लगता है कई दिनों का भूखा है। गरीब को खाने को नहीं मिले तो तंग आकर दंगा करेगा। जी हां, खून-खराबा करेगा......'

दुकानदार ने रुपया लेकर उसे थोड़ा-सा आटा दे दिया। वह दोपहर बाद घर पहुंचा। बीवी ने रोटियां बनाईं, तीनों ने चुपचाप खा लीं। भूख का दानव पीछे की ओर से छलांग लगाकर फिर उसकी गर्दन पर सवार हो गया। सुबह उठकर उसने मजमा लगाने का सारा सामान इकट्ठा करना शुरू कर दिया। लड़का चुपचाप जमीन पर लेटा बाप को काम करते देख रहा है। कभी-कभी वह ठंडे चूल्हे की ओर भी देख लेता है। मां उसकी निगाहों का मतलब समझ गई। ट्रंक के कोने से दो कागज की पुड़िया निकालती है। एक में चीनी और एक में थोड़ी-सी चाय की पत्ती। वह चूल्हा जलाकर बिना दूध की चाय बनाती है और बाप-बेटे के सामने पीतल के गिलासों में डालकर रख देती है। बाप गिलास उठाकर घूंट भरना आरंभ कर देता है। बेटा गिलास की ओर हाथ तक नहीं बढ़ाता।

'अब क्या मंतर पढ़ रहा है। चाय पी। काम पर चलना है।'

'नहीं जाता। मैं रोटी खांणी है।'

'तू सीधी तरह उठता है या करूं छितरोल।'

'नहीं जाता। नहीं जाता।' और लड़के ने हाथ मारकर चाय नीचे गिरा दी। उसने हाथ बढ़ाकर लड़के के गले में पंजा फंसा दिया और दूसरे हाथ से उसे बेतहाशा पीटना शुरू कर दिया। घरवाली ने झपटकर उसे धक्का दिया और लड़के को अपने पीछा-पीछे कर लिया।

'खाने को रोटी नहीं ला सकता और ऊपर से कसाइयों की तरह लड़के को पीट रहा है। इतना ही शेर है तो डाल कहीं डाका। काट ले किसी की गर्दन। दे-दे हम दोनों को जहर।'

'मैं कहता हूं परे हट जा। मैं इस हराम के बीज की सारी अकड़ निकाल दूंगा। देखूं कैसे नहीं जाता काम पर।'

'नहीं हटती, नहीं हटती। कर ले जो करना है।'

और फिर मरे हुए चीते के गुफा जैसे गले में सुबह का दृश्य अभी-अभी फिर दुहरा गया। जलता चूल्हा। जलती हुई लकड़ी को खींचता उसका हाथ हवा में लहराया, बीवी ने दोनों हाथ बचाव के लिए ऊपर उठाए। हाथों के घेरे को तोड़कर बीवी के बाए गाल पर जलती लकड़ी का वार। एक लंबी चीख। लड़के का चुपचाप काम के लिए साथ निकल पड़ना। नीम का पेड़। आसपास जमा हो गई भीड़ और गुर्राता हुआ मरे चीते का सिर।

अब तक पचास-साठ आदमी घेरा डालकर खड़े हो चुके हैं। उसने जमीन में एक लंबी-सी कील गाड़कर टोकरी में से नेवला निकालकर रस्सी के साथ कील से बांध दिया। नेवला छोटे-से दायरे में घूमता है, ठहरकर, बिटर-बिटर सब तरफ देखता है। आगे बैठे लड़कों में से कोई शी की आवाज करता है और नेवला फिर से छोटे-से दायरे में बेतहाशा भागना शुरू कर देता है। लोग अंदाजा लगा लेते हैं कि दूसरी ओर छोटी टोकरी में सांप बंद है। उनके चेहरे पर खूंखार खुशी की झलक फैल जाती है-तो सांप-नेवलों की लड़ाई देखने को मिलेगी।

लेकिन तमाशा शुरू होने से पहले ही एक सिपाही भीड़ को चीरकर उसके सामने आ ठहरा।

'चल। उठ यहां से अपना टीम-डब्बा। साले बाप की सड़क समझ रखी है क्या। सारा ट्रैफिक रोक रखा है।'

भीड़ से तरह-तरह की आवाजें आती हैं।

'अजी, गरीब आदमी है। छोड़ दो। बेचारे को रोटी के लिए पैसा कमा लेने दो।'

उसके लिए पुलिसवालों से मजमा लगाने से रोकना कोई नई बात नहीं है। वह भीड़ के शोर-शराबे के बीच एक रुपये में सिपाही से सौदा पटा लेता है। सिपाही सबसे आगे, वी.आई.पी. का स्थान ग्रहण करके खड़ा हो गया।

वह अपनी जेब में एक मैली-सी ताश निकालकर पत्ता छिपाने और बताने के खेल शुरू करता है। लेकिन लोग इसके प्रति कोई उत्साह अथवा उत्सुकता नहीं दिखाते। एक मोटी आवाज उछलती है, 'उस्ताद, छोड़ यह चालाकियां। तेरे से अच्छे ताश के खेल मैं दिखा सकता हूं। कोई नया जोश पैदा कर, नया।'

उसका लड़का ढोल पीटकर, कभी सिर के बल जमीन पर खड़ा होकर, कभी हाथों पर सारा वजन डालकर लंबी-लंबी छलांगें लगाते हुए भीड़ का उसके खेलों से ज्यादा मनोरंजन कर रहा है। उसे गुस्सा आ रहा है। वह जानता है भीड़ इन पुराने खेलों के प्रति अब आकर्षित नहीं की जा सकती। सब लोग थोड़ा-सा खून बहता हुआ देखना चाहते हैं। एक कीं-कीं करती-सी बांसुरीनुमा आवाज गूंजती है –

'उस्ताद, लड़ाई दिखा दे। देखता नहीं आग बरस रही है। यह छोटे-छोटे चोंचले छोड़।'

वह सांप वाली टोकरी पर से ढक्कन उठाता है। सांप फिर भी हिलता नहीं। वह लंबी-सी छड़ी का टहोका मारकर सांप को हिलाता है। सांप धीरे-धीरे रेंगकर टोकरी के बाहर आ गया है। वह आवाज लगाता है –

'माई बाप, अब मैं आप लोगों को सांप-नेवले की लड़ाई दिखा ही दूं। माई-बाप, भूख सब कुछ करना सिखा देती है। माई-बाप, देखना दोनों कैसे एक-दूसरे को निगलेंगे। माई-बाप, बोलो एक बार सब मिलकर-जय शंकर की।'

भीड़ ने एक आवाज में जवाब दिया-'जय शंकर की।'

सांप-नेवले के पास जाने से घबरा रहा है। नेवला उछल-उछलकर रस्सी तुड़ाने की कोशिश कर रहा है। आवाज उभरती है - 'साला डरता है।'

'अजी, जान किसको प्यारी नहीं होती।'

'अरे भाई, सांप को जरा आगे खिसकाओ न।'

वह छड़ी से सांप को और आगे करता है। इस वक्त बड़ी फुर्ती से काम लेना है। नेवले का सांप पर मुंह पड़ते ही उसे इन दोनों से अलग कर देना है, वरना नेवला सांप को मार डालेगा और नया सांप खरीदने के पैसे उसके पास नहीं। नेवले ने छोटा-सा मुंह खोलकर सांप की पूंछ में दांत गाड़ दिये हैं। सांप छटपटा रहा है। वह नेवले की पीठ पर छड़ी मारकर दोनों को अलग कर देता है।

भीड़ विरोध में शोर मचा रही है।

'यह चालाकी है। अभी इनकी लड़ाई हुई नहीं। सांप को फिर से नेवले के पास छोड़ो।'

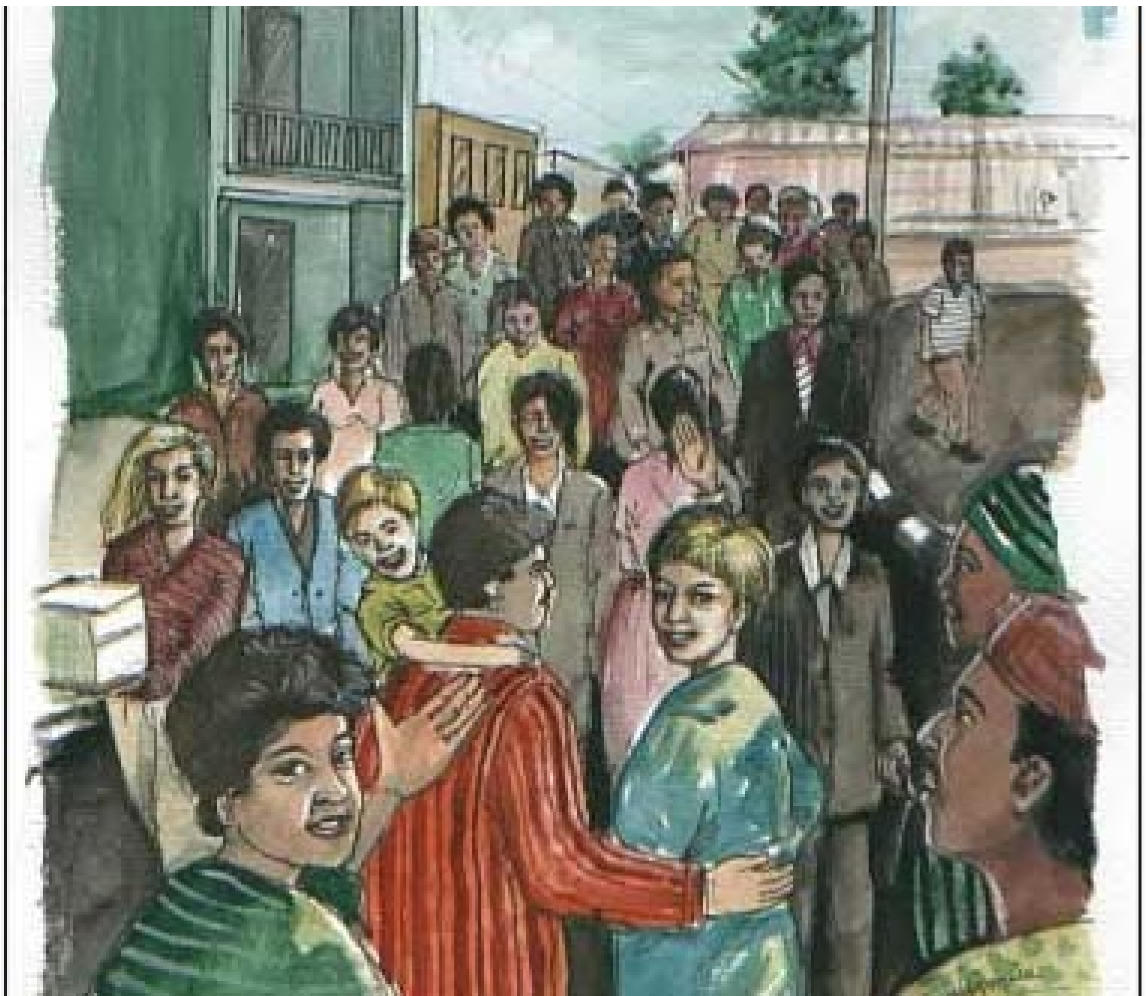

'हमारा पैसा कोई हराम का नहीं।'

'उस्ताद, पूरी लड़ाई होने दे। मैं एक रुपया दूंगा।'

उसने हवा में ऊंचा उठा हाथ और हाथ में पकड़ा नोट देख लिया। वह भीड़ के मूड को समझ रहा है। यह लोग पैसा इतनी आसानी से देने वाले नहीं। सांप को नेवले के पास पटक दिया। इस बार नेवले ने पहले ही झटके में सांप का मुंह पकड़ लिया। खून की छोटी बूंदें सांप के शरीर पर चमक आईं। सांप छटपटा रहा है।

नेवला लगातार एक दायरे में दौड़ रहा है। वह नेवले के पीछे भाग रहा है - सांप को छुड़ाने के लिए। भीड़ जोश में आ गई है।

'मजा आ गया। नेवला साला गजब का है।'

'देखो कैसे सांप की गर्दन पकड़ रखी है।'

'उस्ताद छुड़ा दो। नहीं तो सांप गया तुम्हारा।'

उसने हाथ ऊपर उठाया। नेवले की दुम पर छड़ी मारी, लेकिन इस क्षणांश में नेवला थोड़ा आगे सरक चुका है। छड़ी के जोर के साथ नेवले की कमर टूट गई। नेवला तीन-चार बार छटपटाया और फिर हिलना बंद हो गया। उसके दांत और जोर से सांप की गर्दन पर कस गए। अब सांप ने भी तड़पना बंद कर दिया। जो हाथ एक रुपये के नोट को हिला रहा था वह भीड़ से गायब हो चुका है। वह माथे पर हाथ रखकर नीचे बैठ गया। भीड़ ने थोड़े से सिक्के चादर पर फेंक दिये। उसकी निगाह सिपाही पर पड़ती है। सिपाही की आंखें चादर पर पड़ी रेजगारी को गिनकर एक रुपये के नोट में बदल रही है। वह अंदाजा लगा लेता है। उसके हिस्से में सिपाही को पैसे देने के बाद रात का आटा शायद ही पड़े। लोग अपनी जगह से हिलना शुरू कर देते हैं। वह गरजकर बोलता है –

'खबरदार। कोई मां का लाल अपनी लगह से न हिले। मां काली की कसम है। अभी असली खेल बाकी है।'

वह अपनी कमर से खोंसा हुआ चाकू बाहर निकाल लेता है। सूरज की रोशनी में चार इंच लंबा लोहा चमक उठता है। वह अपनी कमीज को उतार देता है। दोनों हाथों से पेट को पीटना शुरू कर देता है। उसका पेट किसी खाली घड़े की तरह गड़-गड़ की आवाज के साथ बज रहा है।

'माई बाप! पेट का सवाल है। पापी पेट का सवाल है। अब मैं अपने लड़के, अपने जिगर के टुकड़े के पेट में चाकू घोंप दूंगा। माई-बाप, कोई अपनी जगह से मत हिलना। माई बाप, मेरे लड़के की जिंदगी का सवाल है। आप हिले तो वह मर जाएगा। मैं मंतर से काली मां को सिद्ध करूंगा। आप देखेंगे लड़के के पेट से खून के फव्वारे निकलेंगे। लेकिन काली मां की कृपा से वह मरेगा नहीं। कोई न हिले। नहीं तो मेरे लड़के का खून उसके सिर पर होगा।'

अब भीड़ डर गई। वह 'जय माता की, जय माता की' चीखता हुआ दायरे में दौड़ रहा है।

लड़का कहां गया? लड़का कहां गया?

अब भीड़ ध्यान देती है कि उसका लड़का वहां से खिसक गया है। लेकिन वह जानता है लड़का इस वक्त रबड़ की छोटी-सी नली में लाल पानी भर रहा है। फिर वह इस पानी से भरे रबड़ के गुब्बारे को पेट के साथ बांध लेगा। वह चाकू का तिरछा वार करेगा। चाकू लाल पानी से भरे गुब्बारे में चुभ जाएगा। लोग लाल पानी को खून समझ लेंगे। लड़का हमेशा इस मौके पर गायब हो जाता है, भीड़ के तनाव और आतंक को टूटने की सीमा तक बढ़ा देता है।

लड़का भीड़ में से रास्ता बनाकर दायरे के अंदर आ गया है। वह लाल रंग की आइसक्रीम चूस रहा है। चादर से कुछ पैसे चुपके से उठाकर वह कुल्फी खरीद लाया है।

लड़का बाप के हाथ में चमकता चाकू देखकर भाग खड़ा होता है। बाप उसकी ओर झपटता है। लड़का चीखता है। बाप खुश हो रहा है। आज लड़का पूरे दिल के साथ खेल में भाग ले रहा है। खूब पैसे आएंगे। उसकी आंखों में खून उतर आया। लड़का अब भी चीख रहा है, भाग रहा है।

'जय काली मां की। माई-बाप, जान किसको प्यारी नहीं होती। माई-बाप पेट का सवाल है। पापी पेट का। वरना कौन बाप अपने बेटे को चाकू से फाड़ेगा।'

अब वह दोनों हाथों से पेट को पीटता हुआ लड़के के पीछे भाग रहा है, चादर पर पैसे गिरने शुरू हो जाते हैं। आवाजें आती हैं - डरी हुई और आतंकित।

'अरे छोड़ दो। मत मारो। जाने दो। देखो, बेचारा कैसे चीख रहा है।'

लेकिन पैसे गिरते देखकर उसका उत्साह बढ़ गया। खेल शुरू होने से पहले लोग डरकर पैसे फेंक रहे हैं। खत्म होने पर कम से कम दस रुपये तो मिलेंगे ही।

अब उसे एक लंबी छलांग लगाकर लड़के को गर्दन से पकड़ लिया। उसके धक्का देकर जमीन पर गिरा दिया। वह लड़के की छाती को घुटनों से दबाकर उसके ऊपर सवार हो गया। लड़का किसी जिबह होते बकरे की तरह बें-बें कर रहा है, छटपटा रहा है। उसके हाथों से आइसक्रीम छिटककर दूर जा गिरी। वह चीख मारता है –

'बापू, मत मार। बापू, छोड़ दे।'

'जय काली माता की।'

उसका हाथ हवा में ऊपर उठा, चाकू सूरज की रोशनी से लपलपाता है और तिरछा होकर लड़के के पेट की ओर, बिल्कुल पसलियों के नीचे जिगर वाली जगह में घुस जाता है।

पहले लाल रंग की कुछ बूंदे चाकू लगने से फट गई कमीज पर उभरती हैं। फिर यह बूंदें एक पतली धार में बदल गई। लड़का छटपटा रहा है। सफेद चादर पर सिक्के गिर रहे हैं। अब पतली धार एक छोटे-से फव्वारे की तरह उछलती है। वह चाकू बाहर खींचता है। जोर क्यों लगा रहा है? रबड़ के गुब्बारे से तो चाकू बिना जोर लगाए बाहर निकल आता है। लड़के के जिस्म में से जोर लगाकर चीखें उभरती हैं। 'बापू, मर गया।'

वह लड़के की कमीज उठाकर देखकर देखता है। लेकिन वहां रबड़ का गुब्बारा बंधा ही नहीं है। लड़का आइसक्रीम खाने भीड़ से बाहर गया था। वह लाल पानी से भरा गुब्बारा पेट पर बांधना भूल गया। वह उछलकर लड़के की छाती से नीचे उतर गया। लड़के का जिस्म किसी गर्दन कटे जानवर की तरह जमीन पर उछल रहा है। वह चीख-चीखकर कह रहा है - 'माई-बाप, पेट का सवाल है। पापी पेट का। मैंने लड़के का खून कर दिया है।'

भीड़ ने लड़के के पेट के घाव से निकलते असली खून को देख लिया लोग तेजी से वहां से भाग रहे हैं। पुलिस का सिपाही सबसे पहले वहां से गायब हो गया।

लड़के का जिस्म तड़पकर उछल रहा है। अब वह चीते की मरी हुई खोपड़ी से टकरा गया है। खोपड़ी ईंट पर से नीचे जमीन पर गिर गई। लंबे-लंबे, चीते के नुकीले दांत खून से सन गए। सूरज खून देखकर धमक गया। झट से नीम के पीछे छिप गया।

चीते का मरा हुआ सिर मुंह खोले, मुंह बाए जमीन पर खड़ा है। अब लड़के का जिस्म रह-रह कर तड़प रहा है। फिर एक लंबी चीख के साथ वह हिलना बंद कर देता है। खून का छोटा-सा, सुस्त-सा दरिया धरती पर धीरे-धीरे फैल रहा है। वह मरे हुए चीते की खोपड़ी के मुंह में झांकता है।

उसकी घरवाली अपने बचाव के लिए दोनों हाथ ऊपर किए खड़ी है और उसके हाथों में चूल्हे से बाहर खींची हुई जलती हुई लकड़ी और इसी के साथ दूसरा दृश्य जुड़ जाता है। चमक मारता चाकू, हवा में उठा उसका हाथ, लड़के के जिगर में घुसता चाकू, एक लंबी चीख और आसपास सुस्ती के साथ फैलता जा रहा खून का दरिया......।